ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 200-203

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

तृतीय योनि और मानव तस्करी के यथार्थ को दर्शाता : गुलाम मंडी

निशा देवी

शोध अध्येत्री (पी–एच.डी.) हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू (जम्मू & काश्मीर), भारत

Received- 24.06.2020, Revised- 27.06.2020, Accepted - 29.06.2020 E-mail: jatiannisha19@gmail.com

सारांश : *साहित्य समाज का दर्पण है जिसमें समाज का प्रत्येक अंग प्रतिबिम्बित होता है। साहित्य समाज का मार्गदर्शक होता है। प्रत्येक राष्ट्र या देश वहाँ के इतिहास, परम्परा व सभ्यता की जानकारी साहित्य से प्राप्त होती है। मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का अभूतपूर्व योगदान रहा है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक समाज में रहता है। व्यक्ति समाज की महत्वपूर्ण इकाई है। समाज के भीतर ही साहित्यकार जन्म लेता है। साहित्यकार के इर्द–गिर्द जो कुछ भी घटित होता है उसे ही वह अपनी कलम से शब्दबद्ध करता है।*

आज का समय विमर्शों का समय है। साहित्य में आज अनेक विमर्शों की चर्चा की जा रही है। समाज के उपेक्षित, वंचित, शोषित, तिरस्कृत वर्गों पर साहित्य में विचार–विमर्श हो रहा है। वर्तमान समय में विश्व पटल पर मानव अधिकार की चर्चा ने आंदोलन का वेश धारण कर लिया है। हाशिए के समाज या मुख्यधारा से बहिष्कृत किये गए समुदाय को मुख्य–धारा से जोड़ने के प्रयास हो रहे हैं। स्त्री, आदिवासी, दलित, वृद्ध, दिव्यांग आदि विषयों पर विमर्श चल रहे हैं। इन विषयों के अतिरिक्त ऐसे विषय भी हैं जिस पर लम्बे अन्तराल तक साहित्यकारों ने चुप्पी धारण की हुई थी। नब्बे के दशक तक जिनका कहीं किसी बुद्धिजीवी ने स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है। वे विषय हैं किन्नर जीवन का यथार्थ और मानव तस्करी। सभ्य समाज में नाम लेने पर भी लज्जा अनुभव करने वाले समुदाय किन्नर/थर्ड जेंडर/तृतीय योनि पर आज हर स्तर पर चर्चाएं हो रही हैं।

कुंजीभूत शब्द– दर्पण, प्रतिबिम्बित, साहित्य, महत्वपूर्ण, विचार–विमर्श, जन्म, मृत्यु, तिरस्कृत, धारणा, दलित ।

भारतीय समाज में मुख्यतः दो लिंगों की ही बात की जाती है – स्त्रीलिंग और पुल्लिंग। तृतीय लिंग के विषय में कोई भी बात नहीं करना चाहता। यदि कोई इस विषय पर बात करता है तो उसे हिकारत (घृणा) भरी दृष्टि से देखा जाता है। पहली बार साहित्य में किन्नरों का स्पष्ट रूप से उल्लेख नीरजा माधव के 'यमदीप' (2002) उपन्यास में मिलता है। किन्तु इनका इतिहास महाभारत से आरम्भ होता है। 'महाभारत' में शिखंडी का उल्लेख मिलता है जिसके कारण इच्छामृत्यु के वरदान से लैस पितामह का वध हुआ था। अर्जुन का बृहनला रूप भी दृष्टिगत होता है। अर्जुन ने कौरवों द्वारा दिए गए वनवास के अंतिम वर्ष में अज्ञातवास बृहनला नामक किन्नर का वेश धारण कर पूर्ण किया था।

किन्नरों की उपस्थिति भारतीय समाज व संस्कृति में प्राचीन समय से विद्यमान है। इसके संबंध में डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह कहते हैं कि "भारतीय संस्कृति की प्रमुख तीनों धार्मिक परंपराओं (हिन्दू संस्कृति, जैन संस्कृति और बौद्ध संस्कृति) में हिजड़ों का पर्याप्त उल्लेख मिलता है। वैदिक संस्कृति के अनुसार किसी मनुष्य को पुरुष स्त्री या नपुंसक तीन प्रकृति में से एक में देखा जाता रहा। उस काल में ग्रन्थों में 'जेंडर' को 'प्रकृति' के रूप में उल्लेखित किया गया है। कामसूत्र में भी इसक व्याख्या करते हुए कामसूत्रकार वात्सायायन ने पुरुष प्रकृति, स्त्री प्रकृति और तृतीय प्रकृति का उल्लेख किया है।"[1]

जगदीश पवार के अनुसार "किन्नरों का इतिहास पुराना है। जब से सृष्टि बनी है, स्त्री और पुरुष के अलावा एक ऐसा प्राणी भी पैदा होता है जिसका न स्त्री जननांग होता है, न पुरुष अंग। ऐसे जन को किन्नर या हिजड़ा कहा जाता है। पुराणों में इनका जिक्र है। महाभारत में पांडवों के सहयोगी शिखंडी का जिक्र है। बृहन्नला की भी कहानी है, जिसमें अर्जुन को नपुंसक बना दिया जाता है। किन्नर पहले सेनाओं में भी होते थे। इतिहास में जिक्र है राजा लोग उन्हें अपने हरम मे भी कामकाज के लिए रखते थे।"[2] मुगल साम्राज्य में किन्नरों को सम्मान दिया जाता था। हरम में किन्नरों को रानियों का प्रहरी नियुक्त किया जाता था क्योंकि लैंगिक विकृति के कारण ये रानियों के साथ सहवास नहीं कर सकते थे। लेकिन वर्तमान समय में इनकी दशा शोचनीय है। पेट की भूख मिटाने के लिए कहीं इन्हें भीख मांगनी पड़ती है तो कहीं देह व्यापार भी करना पड़ता है।

सभ्य समाज में इनके लिए किन्नर, हिजड़ा, छक्का, खुसरा, नपुंसक, मादा आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

है। लेखिका निर्मला भुराड़िया ने 'गुलाम मंडी' उपन्यास के आरम्भ में ही किन्नर समुदाय के प्रति संवेदना प्रकट करती हुई कहती हैं – "बचपन से ही देखती आई हूं इन लोगो के प्रति समाज के तिरस्कार को, जिन्हें प्रकृति ने तयशुदा जेंडर नहीं दिया। इसमें इनका क्या दोष? ये क्यों हमेशा त्यागे गये, दुरदुराए गये, सताए गये और अपमान के भागी बने, इन्हें हिजड़ा, किन्नर, बृहन्नला, कई नामों से पुकारा जाता है मगर हमेशा तिरस्कार के साथ ही क्यों? आखिर ये बाकी इन्सानों की तरह मानवीय गरिमा के हकदार क्यों नहीं?"[3]

किन्नरों के विषय में प्रत्येक परिवार में बच्चों के मन में भय और घृणा भर दी जाती है। उपन्यास में कल्याणी के माध्यम से लेखिका ने यह स्पष्ट किया है। कल्याणी अंगूरी के साथ साहस जुटाकर चली तो जाती है किन्तु वहां पहुँचकर उसे बचपन में कही बातें याद आती हैं, "हिजड़े उठा के ले जाएंगे, झोली में भरके।" "छोरों का तो वो अंग भंग करके अपने दल में मिला लेंगे।"[4]

कल्याणी सवर्ण समाज की पात्र है। अंगूरी के साथ वह किन्नरों के आवास पर जाती है और उनके जीवन से परिचित होती है। इस समुदाय में गुरू को विशेष महत्व दिया जाता है। गुरू के मरने के बाद भी उसकी समाधि बनाकर आदर सम्मान दिया जाता है। द्वि लिंगी समाज में गुरू को इतना सम्मान नहीं मिलता। सामान्य जन की तरह इनके भीतर भी भक्ति की भावना होती है। अपने देवी–देवताओं को वह श्रद्धापूर्वक मनाते हैं। कल्याणी को अंगूरी अपनी कुलदेवी के दर्शन करवाती है।

"भीतर एक सीला सा कमरा था। वहां लकड़ी की एक पाटी बनी थी जिसके सामने अगरबत्ती स्टैंड पर चार–पाँच अगरबत्तियां जल रही थीं। पाटी पर किसी देवी की तस्वीर थी, जो मुर्गे पर सवार थीं। समीप ही एक कटोरी में कुछ चिरौंजी दाने रखे थे और तस्वीर पर गुड़हल का एक फूल चढ़ा था। अंगूरी ने जैसे आज्ञा दी, "प्रणाम करो दीदी, ये बुचरा माता है। हमारी कुलदेवी।"[5]

इस वर्ग को समाज में मात्र खुशी के अवसर पर ही शुभ माना जाता है। जन्म, विवाह आदि मौकों पर लोग इन्हें सम्मान देते हैं, नेग देते हैं, झोली फैला कर दुआएं मांगते हैं, इनसे आशीर्वाद ग्रहण करते हैं। आम जन की मान्यता है कि हिजड़ों का आशीर्वाद फल देता है, लेकिन बिना खुशी के मौके पर यदि ये आ जाएँ तो लोग अपने घर के दरवाजे तक बंद कर देते हैं। लेखिका ने हमीदा किन्नर के माध्यम से ये स्पष्ट किया है कि स्वार्थी समाज अपने स्वार्थ के लिए उन्हें याद करता है। जैसे हिन्दू धर्म में श्राद्ध के दिनों में कौवे को अन्न देकर पितरों को खुश किया जाता है अन्य दिनों में कौवे को अपने घर आँगन से भगा देते हैं वैसे ही खुशी के अवसर पर इन्हें लोग खुश होगर अपने घर के अन्दर आने देते हैं। ये लोग कौवों को अपनी जात–बिरादरी का मानते हैं। हमीदा के शब्द हैं – "श्राद्ध के दिनों में ही न। स्वारथ रहता है न तुम्हारा। आड़े दिनों में जो कहीं कव्वा आगर बैठ जाए न तुम पर तो नहाओगी–धोओगी, अपशगुन मनाओगी। जैसे हम ना तुम्हारे जो शादी–ब्याह हो तो नाचेंगी–गाएँगी, शगुन पाएंगी मगर यूं जो रास्ते में आ पड़ी ना हम, तो हिजड़ा कहकर धिक्कारोगी।"[6] यह पंक्तियां इनकी आंतरिक वेदना को दर्शाती हैं। हिजड़ों का आर्शीवाद फलदायी होता है। इसकी पुष्टि स्वयं लेखिका ने किन्नर के माध्यम से की है। अंगूरी कल्याणी को उनकी सौ वर्षीय गुरू के चरण स्पर्श करने के लिए कहती है ताँकि कल्याणी को मनचाहा फल मिले। अंगूरी के शब्द हैं, "पैर छूओ और अच्छा–सा एक आशीर्वाद अपने नाम कर लो। हिजड़ा गुरू का आशीर्वाद बहुत फलता है वह भी सौ साल की गुरू। कई लोग आकर पैर छूकर जाते हैं इनके।"[7]

प्रत्येक धर्म, जाति व समुदाय के जन्म, विवाह, मृत्यु आदि के अपने–अपने रीति–रिवाज होते हैं। किन्नर समुदाय हिन्दू धर्म की परम्पराओं, रीति–रिवाजों का पालन करता है लेकिन इनमें दाह संस्कार नहीं होता। ये लाश को दफनाते है। दफनाने से पूर्व शव को जूत–चप्पलों से मारते हैं क्योंकि मान्यता है कि ऐसा करने पर मृत प्राणी इस योनि में दोबारा जन्म नहीं लेगा। इसकी पुष्टि लेखिका ने विवेच्य उपन्यास में इन पंक्तियों द्वारा की है – "एक निर्धारित जगह पर उन्होंने कुदाल–फावड़े लेकर गड्ढा खोदना शुरू किया और लकड़ी के पट्टे ठोक–ठांक कर कफन तैयार किया। कफन को गड्ढे में रखने के बाद उन्होंने लाश को कफन में उतारा मगर सीधे नहीं लेटाया बल्कि लेटाया पेट के बल। लाश को उलटा रखकर उन सभी ने अपनी–अपनी कमर में बंधे जूते–चप्पल निकाल लिए और लाश को पीटना शुरू किया। इस कथन के साथ कि अगले जनम में हिजड़ा न बनना।"[8]

किन्नरों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है। बुचरा, नीलिमा, मनसा और हंसा। बुचरा हिजड़े जन्मजात हिजड़े होते हैं। नीलिमा किसी कारणवश स्वयं को इस समुदाय के लिए समर्पित कर देते हैं। मनसा कोटि के हिजड़े तन के स्थान पर मानसिक रूप से स्वयं को स्त्रीलिंग के अधिक निकट अनुभव करते हैं और हंसा कोटि के हिजड़े नपुंसकता के कारण हिजड़े होते हैं। कोई व्यक्ति खुशी से इस योनि में नहीं आता। तीसरी योनि में जन्म लेने वाले बच्चे को परिवारजन पाप समझते हैं, जिसमें उसका

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

कोई दोष नहीं है। प्रकृति ने उसे तयशुदा जेंडर नहीं दिया। परिवार जन मानसिक या शारीरिक रूप से दिव्यांग बच्चे की दोगुणी सतर्कता के साथ देखभाल करते हैं लेकिन लैंगिक रूप से विकलांग बच्चे को जल्द से जल्द किन्नर समुदाय को सौंप देते हैं। वर्तमान में असली हिजड़ों के अस्तित्व पर नकली हिजड़ों का खतरा मंडरा रहा है। पैसों के लालच में आज शारीरिक रूप से पूर्ण व्यक्ति भी स्वयं को हिजड़ा कहलाने में हिचकता नहीं है। यह असली हिजड़ों की रोज़ी–रोटी पर अपने जहरीले फन फैलाये बैठे हैं। ऐसे में यह समुदाय यदि पुलिस के पास शिकायत दर्ज करता है तो सुरक्षाकर्मी भी इनके साथ अभद्र व्यवहार करते हैं। विवेच्य उपन्यास में लल्लन एक ऐसा पात्र है जो पूर्ण इन्सान है उसने अपने पास नकली हिजड़े रखे हैं जो हिजड़ों के नाम पर लोगों से ज़ोर–जबरदस्ती करते हैं। लेखिका ने भी इसका स्पष्टीकरण किया है कि शिकायतकर्त्ता के साथ पुलिसकर्मी गंदी भाषा का प्रयोग व दुर्व्यवहार करते हैं – "पुलिस कलेक्टर में शिकायत भी की थी कि लल्लन हिजड़ों का नाम बदनाम कर रहा है। हिजड़ों के नाम पर वारदातें कर रहा है पर पुलिस ने यह कहकर टाल दिया कि जांच कैसे करें, किसी की मर्जी के बगैर लिंग परीक्षण करना न कानूनी है, न प्रजातांत्रिक। सब बहाने हैं पुलिस के, पुलिस कितनी कानूनी है और कितनी प्रजातांत्रिक, यह हम जानते हैं, गुरू ने कहा था।"[9]

लिंग स्पष्ट न होने के कारण शैक्षणिक संस्थानों में इन्हें प्रवेश नहीं मिलता। अशिक्षा के कारण ये बेरोज़गारी का शिकार होते हैं, इसलिए यह वर्ग ताली बजाकर नाच–गाकर अपना भरण–पोषण करते हैं। कहीं–कहीं तो इन्हें नेग भी नहीं मिलता मात्र अपमान, तिरस्कार और दुरदुराया जाता है। आन्तरिक वेदना से दुखी होकर कभी–कभी यह समुदाय अश्लीलता पर भी उतारू हो जाता है। इन्हें सामान्य मनुष्य की तरह हर सुविधा दी जाए तो ये पढ़–लिखकर आत्म–निर्भर बन सकते हैं। किन्नरो को स्कूल में दाखिला न मिलने का लेखिका ने भी वर्णन किया है। रानी किन्नर अपनी व्यथा कहते हुए बताती है कि मेरी स्कूल जाने की उम्र हो गई थी तब मुझे वृंदा गुरू के चेले किन्नर समुदाय में ले आए। इस पर हमीदा कहती है कि "तुझे तो इस बात पर खुश होना चाहिए कि तुझे वृंदा गुरू की शरण मिल गयी। बड़े मजे से कह रही है स्कूल जाने की उम्र हो गयी थी। कोई भरती करता क्या पाठशाला में?, पहले पूछते मेल कि फिमेल। अपनी वो शर्मिला है न, छोरा बन के भरती हुई थीं, तो बहनजी ने एक दिन चड्डी उतरवा ली थी उसकी और जूते मार के स्कूल से निकलवा दिया था उसको।"[10]

15 अप्रैल 2015 को उच्चतम न्यायालय ने तृतीय लिंग के रूप में इनके अधिकारों को मान्यता प्रदान की है और सभी प्रकार के आवेदन पत्र में तीसरे लिंग का अन्य (वजीमते) के रूप में उल्लेख अनिवार्य कर दिया है। उच्चतम न्यायालय ने इन्हें इच्छानुसार बच्चा गोद लेने का अधिकार भी दिया है। किन्नरों की स्थिति में पहले से सुधार आया है। पूर्ण रूप से इनकी दशा स्वस्थ नहीं हुई है लेकिन प्रयासरत है। उपन्यास में किन्नर रानी कल्याणी की सहायता से सेक्स चेंज़ का ऑपरेशन करवाती है। पढ़ी–लिखी रानी को अमेरिकन सरकार यंग विमन लीडरशिप प्रोग्राम के लिए चुनती है। वहां वो ह्यूमन ट्रैफिकिंग पर स्टडी करती है। इस बिन्दु पर हम इस समुदाय को आगे बढ़ता हुआ देखते हैं। उपन्यास में लेखिका ने मानव तस्करी का यथार्थ भी वर्णित किया है। इससे पूर्व मानव तस्करी पर खुलकर बात किसी साहित्यकार ने नहीं की है। इस विषय को केन्द्र में लेकर लिखा गया यह पहला उपन्यास है। तस्करी एक आर्थिक अपराध है। इसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक लाभ है। मानव तस्करी में मानव को खरीदा और बेचा जाता है। मुख्य रूप से मानव की खरीद–फरोख्त देह–व्यापार के लिए की जाती है। लेखिका ने प्रस्तावना में लिखा है – "जब से दुनिया है, तब से देह व्यापार है। गुलामी के भी कई रूप प्राचीनकाल से अब तक दुनिया में विद्यमान रहे हैं। एक समय पर इन्सानों की खरीद–फरोख्त बेशर्मी से होती थी। जायज तौर पर होती थी। आज दुनिया भर में इन्सान द्वारा दूसरे को खरीदना, फंसाना और गुलाम बना लेना नाजायज घोषित हो चुका है ... लिहाजा आज के जमाने में भी इन्सानों की खरीद–फरोख्त होती है, देह व्यापार के लिए भी और बेगार के लिए भी जिसे अब ह्यूमन ट्रैफिकिंग या मानव तस्करी कहा जाता है।"[11]

विवेच्य उपन्यास बृहद फलक को छूने वाला उपन्यास है। तृतीय लिंगी समाज की जगह मानव तस्करी के जिस अनछुए विषय को लेखिका ने छुआ है वह निश्चित रूप से अनूठा और बहुत ही संवेदनशील है। इसमें स्त्रियों के शारीरिक शोषण और मानव तस्करी की वर्तमान समय में वैश्विक पटल पर फैली समस्या को अलग कोण से दर्शाया गया है।

उपन्यास की नायिकाएँ कल्याणी और जानकी हैं जिनके माध्यम से लेखिका ने चमचमाती दुनिया के पीछे का भयावह दृश्य दर्शाया है जो सामान्य जन के लिए आज भी रहस्यमयी अपराध की दुनिया है। मानव तस्करी को बढ़ावा देने में गरीबी व बेरोज़गारी अहम भूमिका निभा रही हैं। तस्कर भोली–भाली लड़कियों को पैसों का, नौकरी का लालच देकर अपने जाल में फंसाते हैं और फिर मजबूरी,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

विवशता देखकर या परिवार को लेकर धमकाया जाता है। इनके चंगुल में एक बार फंस जाने के बाद निकलना बहुत ही कठिन है। तस्करी करके लाई गई लड़कियां यदि तस्करों की इच्छानुसार काम न करे तो उन्हें शारीरिक प्रताड़ना कम मानसिक अधिक देते हैं। शारीरिक प्रताड़ना देना उनके लिए नुकसानदायक है क्योंकि कमसिन लड़कियों की देह के माध्यम से ही उन्हें पैसा मिलता है। विवेच्य उपन्यास में अडेला नामक पात्र मैक नामक तस्कर के जाल में फंसी हुई थी। एक दिन वह पाइंटेट हील पहनने से इनकार कर देती है। ऐसा करने पर मैक उसे मानसिक रूप से दण्डित करता है, "मारपीट कभी नहीं करता या किसी लड़की को ऐसी शारीरिक यंत्रणा कभी नहीं देता जिससे चोट का कोई निशान पड़े और 'माल' खराब हो। वह ऐसा कुछ करता है जिससे लड़की को मन पर चोट पड़े कोई मजबूरी याद आ जाए या ऐसा कोई प्वाइंट जिससे वह इमोशनल ब्लैकमेल कर सके।"[12]

परिवार की रक्षा का लेकर यह ताउम्र उन्हीं के पास रहती है। यहाँ से बाहर आकर समाज उन्हें अपनाएगा या नहीं यह सोच–सोचकर वह स्वयं ही इस काली दुनिया से नहीं निकलतीं। यह तस्कर आज विश्वभर में फैले हुए हैं। इनका गिरोह कहीं पकड़ में न आ जाए इसके प्रति भी ये सर्तक रहते हैं। मानव तस्करी केवल लड़कियों की ही नहीं हो रही बल्कि छोटे लड़कों की भी हो रही है। उपन्यास में लेखिका ने एक मुत्थू नामक छोटे बच्चे का भी उल्लेख किया है जिससे देह व्यापार करवाया जाता है। सरकार इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है। लेखिका इसके प्रति बहुत चिंतित है। वे कहती हैं – "यह औरतों को उठाने का, उन्हें बेचने का धन्धा कराने का आर्गेनाइज्ड क्राइम है। अमेरिका, यूरोप, एशिया, भारत, नेपाल, रशिया, रूमानिया, हर्जेगोविना या लेटिन अमेरिका। हर मैक और हर लारा के तार जुड़े हैं। तभी तो ये सरकारों की नाक के नीचे बैठकर मानव मांस बेचे लेते हैं, पूरे काग–जात के बगैर, एक से दूसरे देश में आवाजाही करके अन्तरराष्ट्रीय प्रशासन को गच्चा दे लेते हैं।"[13] इस संगीन अपराध करने वालों के प्रति राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय प्रशासन को कठोर कानून बनाना होगा।

जानकी जैसी किशोरवय युवतियाँ अपने सपनों को पूरा करने के लिए इनके जाल में फंसती हैं। उपन्यास में लेखिका ने उपन्यास का अंत सुखद बताया है। जानकी किन्नर रानी, पुलिस प्रशासन व छळव्से की सहायता द्वारा अपने घर पहुँचती है लेकिन प्रत्येक लड़की की किस्मत जानकी की तरह नहीं होती। जानकी की बहन लक्ष्मी को आरम्भ में उसके पिता घुंघरू द्वारा बेचा जाता है और फिर देह व्यापार में उसे अनेकों बार बेचा–खरीदा जाता है। इसी प्रक्रिया में वह एड्स नामक गम्भीर बिमारी का शिकार होती है। लेकिन गैर सरकारी संगठन द्वारा इस दलदल से बाहर निकाली जाती है। आज भी लक्ष्मी जैसी अनेक युवतियाँ इनके अधीन हैं। कई गैर सरकारी संगठन इस नेक काम में संलग्न हैं। उपन्यास में सखी शरणास्थी आदि छळव्से इसके विरुद्ध प्रयासरत हैं।

सामाजिक उपेक्षा का शिकार किन्नर समुदाय की समस्याओं और मानव तस्करी को केन्द्र में लेकर हिन्दी साहित्य में लिखा गया यह पहला उपन्यास है। लेखिका ने अपनी लेखनी द्वारा हमें जागृत किया है कि हमें किन्नरों के प्रति स्वच्छ दृष्टि रखनी चाहिए। यह भी सभ्य समाज का हिस्सा है। वर्तमान समय में इस वर्ग को लेकर अनेक शोध ा कार्य हो रहे हैं। पहले की तुलना में साहित्य भी अधिक है। विश्व धरातल पर आज किन्नर विमर्श फैला हुआ है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद किन्नरों की स्थिति में सुधार भी हुआ है। मानव तस्करी जैसी वैश्विक समस्या को बहुत ही गम्भीरता के साथ रेखांकित किया गया है। उपन्यास का अंत सुखांत है। कल्याणी और गौतम की तरह प्रत्येक अभिभावकों को मानव तस्करी से निकाले गए बच्चों को खुशी–खुशी अपनाना चाहिए। यदि अभिभावक अपनाएँगे तो समाज भी स्वीकार करेगा और पीड़ित अवसाद मुक्त होगा। विवेच्य उपन्यास लेखिका की सराहनीय पहल और प्रयास है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संपादकीय, विमर्श का तीसरा पक्ष :थर्ड जेंडर
2. विमर्श का तीसरा पक्ष : थर्ड जेंडर, पृ. 113–114, संपादक विजेन्द्र प्रताप सिंह, रवि कुमार गौड़
3. भुराड़िया निर्मला, गुलाम मंडी, पृ. 7।
4. वही, पृ. 12।
5. वही, पृ. 13।
6. वही, पृ. 12।
7. वही, पृ. 14।
8. वही, पृ. 66।
9. वही, पृ. 67।
10. वही, पृ. 69।
11. वही, पृ. 05।
12. वही, पृ. 17।
13. वही, पृ. 26।

*****